ROLE OF CONFLICT THEORY IN SOCIAL CHANGE

Compiled by
Dr. S. Mehdi. A. Zaidi

समाजशास्त्री प्रकार्यवादी दृष्टिकोण को सामा॰ परिवर्तन की व्याख्या करने में असमर्थ मानते हैं। क्यों कि Functionalism में System (व्यवस्था) के अंगों की स्थितियों और प्रकार्यों का ही विश्लेषण किया जाता है। Social change की व्याख्या परिवर्तन के कारकों के साथ अनुकूलन न करने की प्रक्रिया के रूप में की गयी है। Sociologist मानते हैं कि Conflict के अभाव में परिवर्तन की सम्भावना Minus ही समझना चाहिये। यदि समाज में Friendly, Cooperative, Law & Order, peace है तो स्वाभाविक ही है कि किसी के मन में परिवर्तन की इच्छा नहीं होगी। अपेक्षित स्थिति में परिवर्तन कौन चाहेगा। लेकिन जब उपर्युक्त तत्वों का अभाव होगा तो सन्तुलन की जगह असन्तुलन शुरू हो जायेगा। और ऐसी स्थिति में समाज विरोधों, तनावों और संघर्षों का अखाड़ा बन जाता है। और यही वह स्थिति है जब परिवर्तन स्वीकार्य है। अत: Social conflict is the base of social change.

इसी विवरण को आदि को आधार मानते हुये अर्थात् परिवर्तन की तथ्यात्मक व्याख्या करने हेतु संघर्षवादी दृष्टिकोण अत्यन्त महत्वपूर्ण पद्धति कही जा सकती है। Conflict theory में सब से अधिक महत्व Marxian theory को दिया जाता है। और Marx का सम्पूर्ण सामा॰ सिद्धान्त वर्ग संघर्ष (Class struggle) के आधार पर स्पष्ट किया गया है। Marx स्वयं कहते हैं कि "आज तक का सम्पूर्ण मानव इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" Marx समाज का अध्ययन प्रक्रिया के रूप में करना चाहते हैं। न कि एक स्थाई अवस्था के रूप में। Social Life चलती फिरती घटनाओं व प्रक्रियाओं की जटिलता का नाम है। Marx ने Hegel की द्वन्द्ववाद को अपनाकर वर्ग संघर्ष की व्याख्या की है Marx के विचार से, उत्पादन की प्रणाली के फलस्वरूप जो आर्थिक व्यवस्था जन्म लेती है उस में सदैव ही दो वर्ग बन जाते हैं। एक वर्ग जिसके पास उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व या अधिकार होता है और दूसरा वर्ग जिस के पास अपने श्रम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता है। Marx ने पहले वर्ग को पूंजीवा-

(1)

और दूसरे वर्ग को सर्वहारा कहा है। Marx का कहना है कि इतिहास में हमेशा यह दो वर्ग काम करते रहे हैं। प्रारम्भ में मालिक और दास फिर सामन्त और कृषक और आज पूंजीपति और श्रमिक।

※ What Is Conflict Theory ;- संघर्षवादी सिद्धान्त क्या है इसकी Origin कब कैसे हुई इस पर प्रकाश डालते हुये Francis Abrahim का कहना है कि

"Whereas Structural Functionalism has established itself as a dominant mode of Sociological analysis, Conflict theory is still in its infantile stage."

समाज में समानता और विभिन्नता दो प्रमुख विशेषताएँ पाई जाती हैं उन दोनो विशेषताओं पर Social Scientists ने ध्यान केन्द्रित किया है। जिन वैज्ञानिकों ने समानता को अपनी व्यवस्था का आधार बनाया है उन्होंने समाज को एक सहयोगी एकतापूर्ण और संगठित अथवा एकीकृत तथा स्थायी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है। दूसरी तरफ जिन विद्वानों ने मानवीय भिन्नता को सामा० व्याख्या का केन्द्रीय विषय बनाया गया, उन्होंने पारस्परिक विरोध, तनाव प्रतिस्पर्धा और संघर्ष से परिपूर्ण समाज का चित्र प्रस्तुत किया है। इस प्रकार के पहले वर्ग के Scientists ने Associative process of Society तथा Associative processes in Social Functions का नाम दिया है और दूसरे वर्ग के सामा० विज्ञानिकों ने Social Conflict Theory का नाम दिया है।

ORIENTATION OF GENERAL CONFLICT :- यह तीन मान्यताओं पर आधारित है।

(A) पहली मान्यता तो यह है कि व्यक्तियों में कई तरह के बुनियादी स्वार्थ होते हैं। इनको किसी न किसी तरह लोग हासिल करना चाहता है। हालाँकि Scientist प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के इस सामान्य चरित्र का खुलासा नहीं करते हैं।

(B) दूसरी मान्यता यह है कि Conflict Theory का Central poi

यह है कि किसी भी संघर्ष के पीछे अधिकतम शक्ति (Power) को प्राप्त करने का प्रयास अवश्यक होता है। यह सिद्धान्त बनाने वालो की यह मान्यता है कि शक्ति के स्रोत तो बहुत कम है और उन्हे प्राप्त करने वाले बहुत अधिक। दूसरी बात यह है कि कभी भी शक्ति या सत्ता समान रूप से बाँटी नहीं जा सकती है। किसी भी के पास बहुत अधिक शक्ति केन्द्रित होती है और किसी के पास बहुत कम लेकिन हर व्यक्ति या समूह शक्ति में अधिकतम हिस्सा चाहता है और यही कारण है कि संघर्ष टाला नहीं जा सकता है। और इसी को International level पर Power Blocks भी कहा जाता है।

© तीसरी मान्यता यह है कि संघर्ष का प्रत्येक पहलू मूल्यो व विचारधाराओं से युक्त होता है। ये समूह वास्तव में मूल्य व विचारधारा को एक हथियार की तरह हाथ में लेते है। और इस से Conflict अपरिहार्य हो जाता है। विकसित देशो मे पूंजीवाद और साम्यवाद प्रेरक हथियार है जिन के आधार पर वे अधिक से अधिक प्रभावशाली बन जाते हैं। इस प्रकार संघर्ष सिद्धान्तवेत्ता इन तीन मान्यताओ का ① व्यक्तिगत हित और संघर्ष ② शक्ति का बटवारा ③ मूल्य और विचारधारा अपने सिद्धान्त का केन्द्रिय आधार स्वीकार करते है।

इन्ही मान्यताओ को दृष्टि में रखते हुये Conflict के तीन सम्प्रदाय हमारे सामने आते हैं जैसा की M. Francis Abraham ने अपनी पुस्तक Moder Sociological theories मे प्रदर्शित की है।

① The Power relations tradition of Political philosophy
Contributors names are;- Machiavelli, Bodin, Hobbes, Mosca

② The tradition of Competitive Struggle in Classical ecomies
Contributors:- Adam Smith, R. Malthus, and generations of Economics

③ Sociological Conflict Theory;- It is Largely of Synthesis of

Scanned with CamScanner

these two Traditions — Primary Focus on The UN-EQUAL DISTRIBUTION OF REWADS IN SOCIETY. Such as

① KARL MARKS, a Leading ARCHITECT
② C.W. MILLS ③ Raff DAHRENDROF
③ LEWIS COSER ④ Randall Collins

(Marx is undoubtedly The master theoretician of Conflict-Sociology)

Irving M. Zeitlin ने सामा० संघर्ष की व्याख्या करते हुये कहा है कि आमतौर पर संघर्ष अन्तर्वैयक्तिक असहमत और झगड़ो के कारण होता है और यह ही अन्तर्वैयक्तिक झगड़े वर्ग संघर्ष का रूप लेते हैं और उन्हें ही अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धा और युद्ध में देखा जा सकता है।

Lewis Coser कोजर संघर्ष को एक ऐसा प्रयास मानते हैं जिस में व्यक्ति, मूल्यों सीमित साधनों और शक्ति को प्राप्त करने के लिये विरोधी पर दावा प्रस्तुत करता है और इस प्रयास मे प्रतिद्वन्द्वियों को चोट पहुंचाता है या उन्हें समाप्त कर देता है।

CHARACTERSTICS OF CONFLICT THEORY :-

संघर्ष के सिद्धान्त बनाने वालो का कहना है कि संघर्ष वर्ग के कारण होता है (some Theorists) कुछ सिद्धान्ता के निर्माताओं ने संघर्ष को समूह के बाहर खोजने का प्रयास किया है। इस प्रकार संघर्ष की प्रमुख विशेषताओं को Karl Marx, George Simmel, Max Weber, Coser तथा Dahrendrof के विचारो पर आधारित हैं जैसे :—

① समाज केवल साम्यावस्था नहीं है :- संघर्ष के सिद्धान्तवेता इस बात को

अस्वीकार करते हैं कि समाज सर्व सम्मत, एकीकृत और सजातीय (Homogenous) है। समाज में संघर्ष और दबाव भी होता है, तनाव और विद्रोह भी होते हैं। अतः यदि समाज है तो यह विशेषताएँ भी होगी।

② **समाज और उसके विभिन्न अंगो मे परिवर्तन होता रहता है :-** समाज जड नहीं है इस की सदस्यता जीवित व्यक्तियों की होती है। इसी से आगे समाज के कई भाग होते हैं। जैसे Economic system, Political system, Law system and Education system. और यह सब भाग किसी न किसी तरह बदलते रहते हैं एक भाग में परिवर्तन होता है तो दूसरा भाग उस से प्रभावित होता है और यही संघर्ष का उद्गत है। इसी लिये सामा० परिवर्तन और संघर्ष एक सिक्के के दो पहलू हैं।

③ **समाज की रचना में संघर्ष अन्तर्निहित है :-** समाज की संरचना ही ऐसी होती है जिस में व्यक्तियों और समूहों में विभिन्न स्वार्थ और हित होते हैं। व्यक्ति और समूह अपने हितो की पूर्ति के लिये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष करते रहते हैं।

④ **विकासजनित संघर्ष :-** एक तीसरे प्रकार का संघर्ष आज की दुनिया मे देखने को मिलता है जब किसी परम्परागत देश में विकास कार्यक्रम पैदा होते हैं तो मूल्यो और तकनीकी का संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। जैसे भारत में Environment & development programme की प्रक्रिया के बारे में एक विवाद चल रहा है। पर्यावरणविदो का कहना है कि विकास के कारण जंगल नष्ट होते जा रहे हैं। Cottage Industries चौपट हो चुकी है। Latest technology ने पूर्ण स्थानीय Markets को बरबाद कर दिया है।

⑤ **संघर्ष लाभदायक भी होता है :-** Coser और उस की परम्परा के विचारको का आग्रह है कि conflict हमेशा समाज के लिये हानिकारक नहीं होता है वरन वह लाभदायक

भी होता है। जब एक समाज दूसरे समाज के साथ संघर्ष में होता है तो समाज की Solidarity (सुदृढ़ता) भी बढ़ती है। जब Computer system व्यापार और सरकारी कार्यालो मे आने लगी तो इस के परिणाम स्वरूप कर्मचारियो में Unemployment को लेकर conflict की प्रक्रिया शुरू हो गयी।

KARL MARX CONCEPT & SOCIAL CONFLICT (1818-1883)

THE ECONOMIC BASE OF SOCIETY ;- Marx के विश्लेषण की विशेषता यह है कि वे समाज की पहचान को निश्चित करने मे आर्थिक कारणों को निर्णायक कारक मानते है। इस अर्थ मे Social change भी आर्थिक कारणो के परिणाम स्वरूप होते हैं। सामा० जीवन, विचार, मूल्य, राजनीतिक व्यवस्था, साहित्य, कला, आदि का निर्धारण आर्थिक उत्पादन पर निर्भर करता है। Schumpeter एक उदाहरण देते हैं। जिस प्रकार एक Transmission Belt अपने पर रखे सामान को आगे धकेलता है उसी तरह Mode of Production सामा० जीवन, मूल्य, विचार आदि को आगे बढ़ाती है अर्थात समाज की बुनियादी संरचना (Basic Structure) का आधार आर्थिक है और Super structure का निर्माण Economic basic structure पर निर्भर है।

Marx ने SOCIAL ORGANIZATION को तीन levels में बांटा है जैसा की Table में दिखाया गया है।

① First level of organization = Material Forces of Production (Method of Production)

② Second level of organization = Production Forces (Man relation to nature) → Knowledge of Technology OR Science

③ Third stage (Level) of organization = Man's Relations to Men → So Called — Social Relations

Marx के इस सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण का आज के संदर्भ में यह अर्थ हुआ कि प्रत्येक सामा० आर्थिक व्यवस्था में Knowledge और Social organization में एक संतुलन होता है। लेकिन धीरे 2 यह संतुलन असंतुलन में बदल जाता है क्योंकि Scientific Knowledge तो बढ़ जाती है लेकिन उस अनुपात में Production relations नहीं बढ़ते। U.S.A. के एक अनुभव के अनुसार तकनीकि ज्ञान (Technical Knowledge) दो वर्ष में दुगना हो जाता है। दुर्भाग्य यह है कि Technical Knowledge की वृद्धि की दर से सामा० व्यवस्थाएं में वृद्धि नहीं होती या change नहीं आता है। विकास की दौड़ का यह असंतुलन खाई (LAG) खड़ी कर देता है और परिणामस्वरूप समाज में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।

Marx द्वारा दिये गये दृष्टान्त को लें। जब नई उत्पादन शक्तियाँ सामन्तवादी व्यवस्था में विकासित हुई और इन शक्तियों के बराबर उत्पादन सम्बन्ध विकासित हुए और इन शक्तियों के बराबर उत्पादन समबंध विकासित नहीं हुये तब सामन्तवाद का संघर्ष पूंजीवाद से हुआ। सामन्तवाद में सम्पत्ति सम्बन्ध, बाजार नियंत्रण, कर व्यवस्था और मुद्रा का अस्थायीत्व इस हद तक बढ़ गया कि औद्योगिक पूंजीवाद इसे सहन नहीं कर पाया और परिणाम स्वरूप सामन्तवाद को कफन ओढ़ा दिया गया।

Marx कहते हैं कि आज पूंजीवाद व्यवस्था भी सामन्तवाद की तरह

कठोरता बरत रही है। Marx कहते हैं कि कालान्तर में चलकर पूँजीवाद का भाग्य भी वही होगा जो सामन्तवाद का हुआ था। जिस Speed से changes उत्पादन शक्तियाँ, उत्पादन सम्बन्धों को पीछे छोड़ती जा रही हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में जो कुछ उत्पादन हो रहा है वे Personal wealth के लिये है और यही इसका अन्त होगा। वास्तव में Marx की विचार धारा Positivistic approach पर आधारित है इसी लिये Marx ने जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था उसे संघर्ष और परिवर्तन का (Conflict & change theory) सिद्धान्त कहा जाता है।

Marx का कहना है कि आर्थिक संगठन और विशेषकर सम्पत्ति का स्वामित्व शेष समाज के संगठन को निश्चित करता है। वर्ग संरचना संस्थागत व्यवस्थाएँ और इसी तरह सांस्कृतिक मूल्य, विश्वास, धार्मिक सम्प्रदाय और विभिन्न विचार धाराएँ अन्ततोगत्वा समाज के आर्थिक आधार पर प्रतिनिधित्व करते हैं।

CLASS STRUGGLE. & THE ECONOMIC BASE CONFLICT

MARXS SAID "THE HISTORY OF All HITHERTO EXISTING SOCIETY IS THE HISTORY OF CLASS STRUGGLE."

"अब तक अस्तित्व रखने वाले सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।"

Marx ने दुनियाभर के इतिहास को देखा और जहाँ कहीं उनको Eco.org. मिले वहाँ उनको एक समान सन्देश पाया और वह यह कि Eco.org. दो वर्गों के बीच में संघर्ष पैदा करता है। इस तरह के वर्ग संघर्ष की व्याख्या सामान्य

आर्थिक स्थिति द्वारा जो इन संगठनो में पायी जाती है, की जा सकती है।
Communist manifesto में Marx तथा Angles ने जो बयान दिया था उस का विश्लेषण करे तो इसमे हमें तीन प्रस्ताव स्पष्ट रूप से देखने को मिलते है।

① पहला प्रस्ताव तो यह है कि जिन लोगो की आर्थिक स्थिति या वर्ग स्थिति एक जैसी ही है वे सामान्यतया एक समूह की तरह काम करते है।

② दूसरा प्रस्ताव, यह कि समाज में आर्थिक वर्ग, सब से महत्व पूर्ण समूह है इन Eco. class या Groups का इतिहास वस्तुतः मानव समाज का इतिहास है

③ तीसरा प्रस्ताव यह है कि समाज के वर्गो में पारस्परिक प्रतिरोध (Mutual Antagonism) होता है।

इस प्रकार Marx के वर्ग का सिद्धान्त केवल सामा० संरचना का सिद्धान्त नही है, बल्कि यह सामा० परिवर्तन का सिद्धान्त भी है।

J.H. TURNER'S VIEWS

"In elaborating his model of revolutionary class conflict and social change, Marx delineated an image of social organization that still influences a major portion of Contemporary Sociological theory."

J.H. TURNER, Further said that—

"I think, Marx Simplistic assumptions are; ECONOMIC ORGANIZATION - especially the OWNERSHIP OF PROPERTY determines the organization of the rest Society

Scanned with CamScanner

Property and class (सम्पत्ति और वर्ग)

Marx का मानना है कि वर्ग का सम्बन्ध सम्पत्ति से है। जिस समूह के पास उत्पादन के साधन है जैसे व्यापार, धन्धा, कलकारखाने वे पूंजीपति वर्ग में आते है। दूसरे वे समूह जिन के पास उत्पादन के साधन न्यूनतम है और जो अपना श्रम बेचते है उनको सर्वहारा वर्ग कहते है। इस प्रकार Table No1 में Marx द्वारा वर्गों की स्थिति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

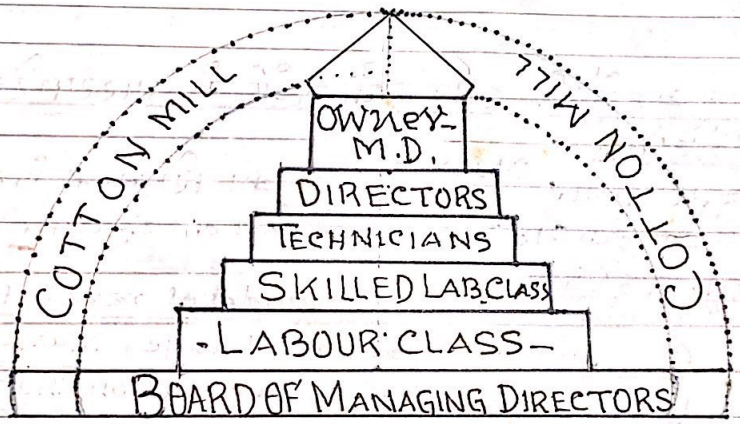

Marx का सिद्धान्त का तर्क है कि विभिन्न वर्गों के हित परस्पर विरोधी होते है। यह विरोध सम्पत्ति के स्वामित्व की व्यवस्था के कारण होता है। यदि एक वर्ग मुनाफा कमाता है तो यह मुनाफा दूसरे के कांधे पर होता है। Marx के अनुसार अतीत मे जो भी प्रमुख आर्थिक व्यवस्था थी उन्होने एक विशेष वर्ग को सुदृढ किया और यह सुदृढ वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करता रहा। Communist Manifesto मे एक जगह पर

Marx & Angles ने कहा था कि :—

" मालिक और गुलाम, (कुलीन) और सामान्य जन, भूमि स्वामी और खेतहर, एक शब्द में अत्याचारी और उत्पीड़ित बराबर एक दूसरे के प्रतिरोध में खड़े होते हैं, और यह दोनों कभी छिपकर या कभी खुल कर अपनी लड़ाई लड़ते हैं।"

इस से आगे Marx फिर कहते हैं कि :—

" वर्ग समाज में उत्पीड़ित वर्ग एक अनिवार्य दशा है और इस में पूँजीपति अत्याचारी होता है और सर्वाहारा उत्पीड़ित।"

यहाँ पर Marx का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वर्ग समाज (Class Society) में शोषण Univesal truth की भांति है। इससे Marx का अर्थशास्त्र के बारे में सार का पता चलता है। क्यों कि जब वे शोषण का जिक्र करते हैं तो उन का आर्थिक सिद्धान्त मूल्य (Value) केन्द्रित होता है जैसा कि Classical Economist Recardo थे। आज कल Marxism के Labour theory of values को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

— Labour theory of values को स्पष्ट करते हुये Marx कहते हैं कि Commodity या वस्तु का मूल्य, वस्तु के उत्पादन में लगाये गये श्रम की परिमाषा में होता है। उदाहरण के लिये एक Table या Chair बनाने मे जो श्रम लगा है (Five or Six hours) यह श्रम Table या Chair का मूल्य है। Economic Market मे जहाँ Labour अपने श्रम को बेचने जाते हैं उन्हे उन के केवल श्रम की कीमत मिलती है जब कि जो कुछ श्रम मजदूर ने लगाया है उससे दो गुनी कीमत वस्तु की बाजार में मिलती है यानि Capitalist जो वस्तु को बेचकर मुनाफा खाता है वह श्रमिक के श्रम का शोषण करके खाता है। इसका मुख्य कारण यह है वस्तु का उत्पादन मूल्य श्रम निश्चित करता है और कीमत पूँजीपति इस तरह Property की सभी व्यवस्थाओं मे हितो का बुनियादी संघर्ष होता है। MARX ने Surplus Value को Conflict का मुख्य आधार माना है।

② CLASS CONSCIOUSNESS ③ CLASS AND FORMATION } Marx का यह तर्क रहा है कि वर्ग संघर्ष ही समाज का अनिवार्य चरित्र है। संघर्ष और युद्ध नहीं है बल्कि वर्गों के बीच में हितों की पूर्ति की लड़ाई है। वास्तविकता यह है कि वर्ग के हित, लाभ, स्वार्थ इतने दृढ़ होते हैं कि वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति अपने वर्ग के हितों की पूर्ति के लिये संगठित होकर किसी भी प्रकार के संघर्ष के लिये कमर कस लेते हैं। यह भी ठीक है कि एक वर्ग दूसरे वर्ग का दुश्मन होता है लेकिन संघर्ष के लिये वर्ग के सदस्यों में वर्ग चेतना आवश्यक है। RAYMON ARON ने अपनी पुस्तक "Main Currents in Sociological Thoughts" मे वर्ग और वर्ग संघर्ष की व्याख्या गहराई से की है। उन्होंने Marx की वर्ग की अवधारणा के तीन प्रस्ताव (Propositions) निकाले।

① वर्गों का अस्तित्व उत्पादन पद्धतियों के विकास के साथ इतिहास की विविध दशाओं से जुड़ा हुआ है।

② वर्ग संघर्ष अनिवार्य रूप से सर्वहारा की अधिनायकवाद की ओर ले जाता है और —

③ यह अधिनायकवाद जो केवल संक्रमण काल होता है (Transitional Period) वर्गों का उन्मूलन करता है। और Marx के DREAM वर्गहीन समाज (CLASS-LESS-SOCIETY) की स्थापना की ओर ले जाता है।

Scanned with CamScanner

Marx ने पुस्तक CAPITAL में वर्ग को परिभाषित करते हुये कहा कि "जब लाखों परिवार ऐसी आर्थिक दशा में जीवनयापन करते हों जो उन्हें उनके जीवन पद्धति उनके हितों, और उनकी संस्कृति से, अन्य वर्गों से विमुख कर देती हो, और उन्हें शत्रुतापूर्ण विरोधी खेमा खड़ा कर देती हो, वर्ग कहलाती है।"

इसी प्रकार Marx ने अपनी पुस्तक 'THE POVERTY OF PHILOSOPHY' में Social class की परिभाषा इस प्रकार की है।

"पहला तो यह कि आर्थिक दशाएँ आम जनता को कामगारों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देती है। दूसरा, इस वर्ग के लिये पूंजीपति अपने प्रभुत्व के कारण काम करने की ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती है। इस तरह यह गरीब, लोगों का समूह जहाँ तक पूंजीपतियों के प्रति उनके सम्बन्धों का सवाल है, एक वर्ग बन जाता है।"

CLASS CONSCIOUSNESS :- Sociology की एक विशेष शाखा है जो की ज्ञान मीमांसा (Epistemology) के नाम से जानी जाती है। यह Epistemology के प्रेणेताओं में Karl Marx, Hegel, & Karl Manheim का बड़ा योगदान है। इन विचारकों का तर्क है कि आदमी में जो कुछ भी ज्ञान है वह उन भौतिक परिस्थितियों की उपज है जिन में वह अपना जीवन यापन करता है ज्ञान की उपज में Marx का उत्पादन सम्बन्धी ऐतिहासिक विश्लेषण यह बताती है कि कामगार वर्ग पूंजीपति की उत्पादन सम्बन्धों के प्रति जो प्रतिक्रिया होती है वही नवीन ज्ञान पैदा करती है।

Scanned with CamScanner

जैसा कुछ उत्पादन शक्तियाँ और उत्पादन सम्बन्ध होंगे उन्हीं के अनुवर्ती इन वर्गों का नाम भी होगा।
Hegel ने भी सामा० चेतना की चर्चा की है उनका तर्क है कि आदमी मे चेतना उस की Ideology के अनुसार आती है जब की Marx ने इस को अस्वीकार किया है। Marx की Thesis यह है कि आदमी की चेतना उस की भौतिक वस्तुओं यानी उत्पादन पदार्थों और उत्पादन शक्तियों के सम्बन्धों के अनुसार होती है। दोनों में अन्तर यह है की Hegel चेतना का आधार विचारों को मानते हैं। और Marx चेतना का आधार उत्पादन शक्तियों से जोड़ते हैं।

CLASS CONFLICT :- वर्गों की उत्पत्ति के साथ ही वर्ग संघर्ष भी शुरू हो गया जैसा Marks and Angels ने Communist manifesto मे कहा है कि तात्विक रूप से वर्ग संघर्ष का स्रोत वर्ग हितों का प्रतिरोध है जो एक वर्ग का हेतु है वह दूसरे का प्रतिरोध है। समाज मे मजदूर व पूंजीपति के हित एक दूसरे के विपरीत होते हैं। एक वर्ग के रूप में बुर्जुआ वर्ग शोषण बढ़ाने, पूंजीवादी प्रणाली को बनाये रखने और अपने Political Econo प्रभुत्व को सुदृढ़ करने मे दिलचस्पी रखता है और दूसरी तरफ मजदूर वर्ग पूंजीवादी व्यवस्था में अपनी वस्तुगत स्थिति के कारण शोषण का उन्मूलन करने, उत्पीड़न को समाप्त करने तथा शोषक राज्य को नष्ट करने मे दिलचस्पी रखता है।

MODERN CLASS CONFLICT :- औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा यातायात

के साधनो के विकास के कारण पूंजीवादी व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ। पूँजीवादी व्यवस्था में बड़े पैमाने पर उत्पादन और एकाधिकार की प्रवृत्तियां विकसित हो जाती हैं Marx के अनुसार पूंजी वह धन है जिस के द्वारा श्रमिकों के श्रम को मूल्य से खरीदकर Surplus value को कवा लिया जाता है यही शोषण कहा जाता है। उधर पूंजीवादी व्यवस्था अपने विकास के लिये नये नये बाजार स्थापित करती है, उस के लिये यातायात के विकास के साधनों को जुटाया जाता है। इस साधनो के उपयोग से भिन्न स्थानो पर कार्य कार्य करने वाले श्रमिकों को परस्पर मिलने जुलने और संगठित सहयोग करने का मौका मिलता है। उत्पादन अधिक होने से पूंजीपतियों के सामने अधिक संकट उत्पन्न हो जाता है अतः छटनी का कार्य कारखानो में प्रारम्भ हो जाता है इससे रोक और बेकारी दूसरी तरफ सौदे वाजी से शोषण का कार्यक्रम भी तीव्र होने लगता है Marx ने लिखा है कि बुर्जुआ अपनी कब्र खोदने वालो की अधिक उत्पत्ति करता है। इस के पतन और सर्वहारा की विजय अपरिहार्य है।

संक्षेप में Marx का वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त इस प्रकार समझा जा सकता है।

1. Class Conflict मानव इतिहास की आधारभूत नियम है जो परिवर्तन को जन्म देता है।
2. वर्ग संघर्ष उत्पादन प्रक्रिया से सम्बन्धित है। उत्पादन के नये प्रकार पुराने प्रारूपों का स्थान लेते है और नये वर्ग पुराने वर्गों का स्थान लेते है अतः Conflict या क्रान्ति होती है।
3. भौतिक आविष्कार उत्पादन प्रक्रिया में परिवर्तन करते है और नये वर्गों का आधार प्रदान करते है। धीरे 2 Social System में प्रतिशोषित वर्ग जागरुक होने लगता है और क्रान्ति जन्म लेती है।

④ शासक वर्ग धर्म, परम्परा, विचार, दर्शन तथा शिक्षा और प्रचार के द्वारा सत्ता स्थिर रखने की चेष्टा करता है। वास्तव में यह सब विशिष्ट उत्पादन व्यवस्था से related तत्व हैं। प्रभुता प्राप्त वर्ग की मान्यता ही धार्मिक और नैतिक विचार बन कर सामा० स्वरूप ले लेती है

THEORY OF DIALECTICAL MATERIALISM

इस सिद्धान्त में Marx तथा Hegels मुख्य हैं जिन को अलग 2 समझना आवश्यक है

A- HEGEL'S DIALECTICS:–

हीगल ही वह विचारक था जिसने सब से पहले यह व्यक्त किया कि Mental और Social विकास विरोधी शक्तियों के संघर्षों के परिणाम स्वरूप पैदा होते हैं। Hegel का कहना है कोई विचार पहले मन में पैदा होता है कुछ समय बाद इस विचार के विरोध में एक नया विचार उत्पन्न होता है अब इन दोनों विचारों में संघर्ष या द्वन्द होता है और इस द्वन्द के परिणाम स्वरूप एक तीसरा विचार नवीन विचार या धारणा उत्पन्न होती है जो पहले दोनों विचारों में सामंजस्य (Adjustment) स्थापित करती है जो कालान्तर में इस विचार के विरोध में पुनः एक और नया विचार उत्पन्न करती है और इस विचार के विरोध में एक नया विचार फिर उत्पन्न होता है Hegel का कहना है कि यह प्रक्रिया मन में चलती रहती है। और इस प्रकार विचार प्रगतिशील रहता है।

Hegel के अनुसार:—

① प्रथम वाले विचार —— को वाद (Thesis) कहते हैं

② दूसरा विचार (विरोधी विचार) —प्रतिवाद (Anti Thesis) है

③ तीसरा विचार या (सामंजस्य पूर्ण विचार) को संवाद या (Synthesis) कहते हैं।

Scanned with CamScanner

इन को क्रमशः सवांल्प (Thesis) विकल्प और समन्वय भी कहा जा सकता है। Hegel के विचार को Table के द्वारा और सरलता से समझाया जा सकता है।

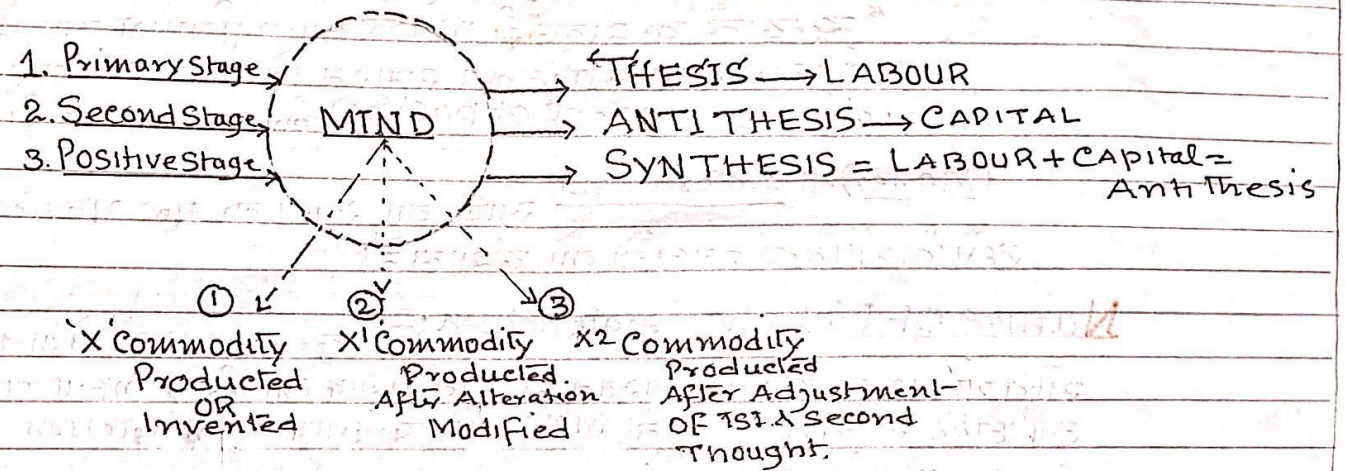

KARL MARX VIEWS :-

IN HEGEL'S Writings dialectical stands on its head. I put it down on its Feet. (Karl Marx)

Marx Said "Matter is not product of mind but mind itself is merely the highiest product of matter."

इस पूरे भाषा से Hegel महोदय की सम्पूर्ण theory को Marx ने अस्वीकार कर दिया। हाँ Marx ने Hegel के द्वन्दवाद को इस सीमा तक स्वीकार किया है कि विश्व का अस्तित्व द्वन्दवाद के कारण है लेकिन इस प्रक्रिया में विचार पहले नहीं है बल्कि वस्तु पहले है।

Scanned with CamScanner

Marx ने मानव इतिहास को एक क्रान्तिकारी की दृष्टि से देखा है उसी का परिणाम है कि उनका द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की अवधारणा द्वन्द्वात्मक (Dialectical) से शुरू होता है।

"द्वन्द्वात्मक शब्द से Marx का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसके अनुसार सृष्टि का समस्त विकास एवं परिवर्तन विरोधियों के संघर्ष (Struggle of opposites) के आधार पर होता है।"

(Matter) या Materialism सृष्टि की रचना के मूल भूत तत्व यानी जीवित रहने के भौतिक साधनों को दर्शाता है।

Nature OF Dialectical materialism ;- द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एक ऐसी सोच या समझ है जिसे वास्तव में मार्क्सवाद का दर्शन कहना चाहिये। यदि उद्गम की दृष्टि से देखा जाये तो Marx का द्वन्द्ववाद या द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दो विचारधाराओं से बना है।

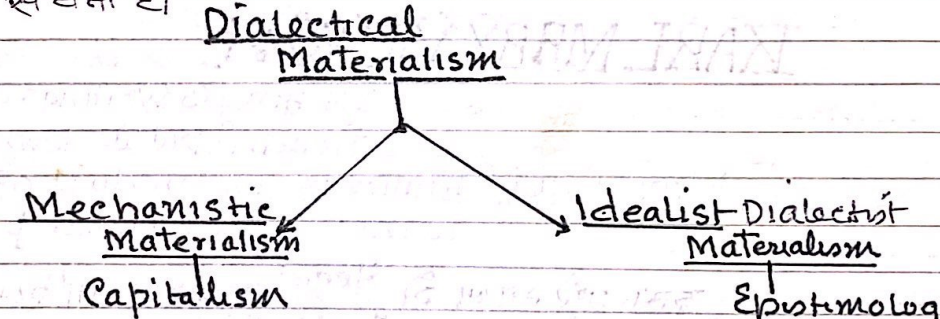

जैसा की FIGNO1 को देखने से पता चलता है कि Marx ने यान्त्रिकतावादी भौतिकतावादी जो की आर्थिक वैज्ञानिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप पैदा

इस तरह की विचार धारा ने Conflict theory को नया आयाम दिया है। Marx ने उन विचारो की भूमिका को निश्चित किया जो लम्बे समय से लोगो के दिमाग मे घर कर गये थे। Marx का कहना है कि कानून, राजनीति, संस्कृति, साहित्य, कला, आदि समाज की Super Structure (अधिसंरचना) को बनाते है, यह अधिसंरचना यानि साहित्य कला, राजनीति आदि और कुछ न होकर आखिरकार समाज के अन्दर जो आर्थिक सम्बन्ध है उन की अभिव्यक्ति मात्र है। सामान्य शब्दो मे जिस तरह के आर्थिक सम्बन्ध होगे उसी तरह के कानून संस्कृति, मनोरंजन भी होगे। Marx ने एक आम उदाहरण देते हुये कहा की वर्ग समाज (Class Society मे आम जनता कई चीजो मे विश्वास रखती है। यद्यपि यह विश्वास सही नही होते, मिथ्या होते है, लेकिन फिर भी यह Ideology का रूप धारण कर लेते है इन का मुख्य उद्देश्य सत्तारूढ व्यक्तियो की Controlling Power को वैधता प्रदान करना है। इस प्रकार की Ideology आम लोगो को यह समझने नही देती है कि उन के हित और स्वार्थ क्या है? Marxian तर्क देते है कि आम जनता को इस तरह की वैचारिकी झूठी चेतना (False Consciousness) है। इसको धर्म मे विश्वास से संज्ञा दी जा सकती है। हमारे देश मे सैकड़ो वर्ष तक गरीब लोग यह सोचते रहे कि उन की गरीबी का कारण उन के पिछले जन्म के पाप है यदि वे इस जन्म मे पूरे लगन से कार्य करे तो गरीबी दूर हो जाये। जो यह Ideology False है यह उन को नही मालूम है। Marx कहते है कि यह सब हरकते वर्ग समाज ही करता है क्योकी इस तरह की चेतना से मजदूरो का शोषण व दमन सरल हो जाता है।

ALIENATION:- एलियनेशन शब्द का प्रारम्भिक अर्थ विदेशी व्यक्ति से था। प्राचीन यूनान मे नगर ही राज्य हुआ करते थे

हुई थी। दूसरी विचारधारा Hegel के आदर्शवादी द्वन्द्व दर्शन है जो की Marx ने अस्वीकार कर दिया।

Marx का द्वन्द्ववाद भौतिकवादी दुनिया को देखने का एक नयां नजरिया है। वास्तव में Marx ने भौतिक जगत को वास्तविक और एक सत्य माना है। इस भौतिक जगत को जिसे प्रकृति भी कहा जाता है जो विरोधी प्रवृतियों के कारण सदैव परिवर्तन होता रहता है। उस की प्रत्येक वस्तु संघर्षरत या द्वन्द्वरत रहती है। फलस्वरूप पुरानी वस्तुएं समाप्त हो जाती है और उन के स्थान पर नई वस्तुएं जन्म ले लेती है। और समाज का स्वरूप बदलता रहता है। उत्पादन की नवीन शक्तियां पैदा होती है। और इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति मे द्वन्द्व या परिवर्तन की एक अनवरत प्रक्रिया जारी रहती है।

Marx ने यह स्वीकार किया है कि प्रकृति सदैव परिवर्तनशील है और इस परिवर्तन के कारण ही समाज का विकास सम्भव होता है। Marx ने यह भी स्वीकार किया की भौतिक पदार्थ ही विश्व का मूल आधार है। पदार्थ का विकास पहले हुआ है विचार या चेतना बाद में हुआ है अतः पदार्थ चेतना की उपज नहीं है। बल्कि स्वंय चेतना पदार्थ की सब से बड़ी उत्पति है।

CULTURE, IDEOLOGY & ALIENATION

Marx संघर्ष सिद्धान्त के साथ संस्कृति, वैचारिकी और अलगाववाद से भी जुड़े हैं Marx ने इस बात पर भी जोर दिया की वे लोग जो सत्ता में है जिन के पास अधिकार और शक्ति है उन के बारे में लोगो की जो आम धारणा है उसका संघर्ष के साथ गहरा सम्बन्ध है। Marx कहते है की वे लोग जो सत्ता में है उन के बारे मे जनता क्या यह सोचती है की वे जो कुछ करते है वही सही है या ऐसा सोचते है कि सत्तारूढ़ दल लोगो का शोषण और दमन करते हैं।